INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

भारतीय ज्ञान परंपरा - शिक्षा के विशेष संदर्भ में

(Indian Knowledge Tradition – with special reference to Education)

Dr. JAYSHRI JAIN
Associate Professor,
Department of Commerce and Management,
Mata Gujri Mahila Mahavidyalaya,
Jabalpur (Madhya Pradesh, India)
E-mail: jayshrijain.6march@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/10.2025-52944755/IRJHISNC2503013

प्रस्तावना –

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास बहुत ही स्वर्णिम था। प्राचीन भारत के मनीषी इस तथ्य से भलीभांति अवगत थे की शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास समाज की चतुर्मुखीउन्नति और सभ्यता के बहुमुखी प्रगति की आधारशिला है। भारत की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए एफ.डब्ल्यू. थॉमस ने लिखा है- "भारत में शिक्षा विदेशी पौधा नहीं है संसार का कोई भी ऐसा देश नहीं है जहां ज्ञान के प्रति प्रेम का इतने प्राचीन समय में अभिर्भाव हुआ हो, या जिसने इतना चिरस्थाई और शक्तिशाली प्रभाव डाला हो।" ज्ञान मनुष्य को पवित्र बनाकर उसे श्रेष्ठ बनाता है। भारतीय विचारको के अनुसार ज्ञान केवल शब्द ज्ञान या पुस्तकिय ज्ञान तक सीमित नहीं है। सच्चा ज्ञान अनुभूतिसे पैदा होता है और वह व्यक्ति के आचरण तथा व्यवहार को पवित्र बनता है। भारतीय दर्शन में केवल सूचनाओं तथा तथ्यों को ज्ञान नहीं कहा गया ज्ञान का विषय मुक्ति है, तथा दूसरोंशब्दों में ज्ञान वह है जो मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करें। ज्ञान के संदर्भ में प्राचीन काल की संपूर्णशिक्षा अंतर यात्रा की शिक्षा थी, परंतु हमारी आज की शिक्षा बाहर की यात्रा है, अतः हमें बाह्य जगत का संपूर्णज्ञान है। परंतु अपने अंतर जगत से हम अपरिचित रह जाते हैं, इसलिए आवश्यकता भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः जागृत करने की जो कि व्यक्ति को बाहर जगत के साथ पुनः अंतर जगत से जोड़ सके तभी हम आधुनिकता के साथ चल सकते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख बिंदु और आधुनिक परिदृश्य -

ज्ञान व अनुभूतिपर बल –

प्राचीन भारत में शिक्षा का पहला उद्देश्य ज्ञान और अनुभूतिपर बोल देना था उस समय छात्रों की मानसिक योग्यता का मापदंड उनके द्वारा प्राप्त किए जाने वाले अंक प्रमाण पत्र या उपाधि पत्र नहीं थे बल्कि योग्यता का मापदंड उनके द्वारा अर्जित किया गया ज्ञान जिसका

प्रभाव भी विद्वत परिषद में शास्त्रार्थ करके देते थे। यहां शिक्षा का उद्देश्य पढ़ना नहीं था अपितु ज्ञान और अनुभव को आत्मसात करना था। श्वेतकेतु और कमलायन इसके उदाहरण थे, जिन्हें 12 वर्ष के अध्ययन के उपरांत भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी नहीं समझ गया था। किंतु धीरे-धीरे शिक्षा का व्यवसायकरण होता गया, और शिक्षा का रूप ही बदल गया। पर वर्तमान में यह महसूस किया गया की स्वर्णिम भारत को लौटना है तो प्राचीन ज्ञान परंपरा को पुनः लाया जाए और इसके लिए शिक्षा में फिर से ज्ञान परंपराओं को जोड़ा जाने लगा।

चित् वृत्तियों का निरोध -

प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य छात्रों की चित् वृत्तियों का निरोध करना था। इसके लिए जप,तप और योग पर विशेष बल दिया जाता था। ताकि छात्रों का मन इधर-उधर ना भटक सके। समय के साथ वर्तमान में पुनः ऐसी शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है जिसमें योग जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है।

चरित्र का निर्माण –

प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का चरित्र निर्माण करना था। गुरुकुलों के उत्तम वातावरण सदाचार के उपदेशों महापुरुषों के उदाहरण महान विभूतियों के आदर्श आदि के द्वारा यह कार्य किए जाते थे। किंतु बीच का समय ऐसा आया जबकि छात्र अपने पथों से भटकने लगे और उन्हें वापस पथ पर लाने के लिए प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के इस उद्देश्य को पुनः कक्षाओं में शुरू किया गया।

व्यक्तित्व का विकास –

हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा ने हमेशा व्यक्तित्व विकास पर जोर दिया था। जिसके लिए छात्रों में आत्म संयम, आत्म सम्मान, आत्मविश्वास आदि सद्गुणों को उत्पन्न किया जाता था। साथ ही गोष्ठियों और वाद विवाद, सभाओं आदि का आयोजन करके उनमें विवेक, न्याय और निष्पक्षिता की शक्तियों को जन्म देकर उनको मजबूत बनाया जाता था। वर्तमान समय में भी इसे जोरों से लागू किया जा रहा है, और छात्रों को इनमें भाग लेना अनिवार्य किया जा रहा है ताकि प्राचीन मनीषियों ,महापुरुषों जैसे वो भी अपना व्यक्तित्व विकास कर सकें। साथ ही पाठ्यक्रम में भी अनिवार्य विषय के रूप में इसे जोड़ा गया है।

भारतीय संस्कृति का संरक्षण व प्रसार –

प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य हमारी संस्कृति का संरक्षण और प्रसार करना था इसका लोहा पूरा विश्व मानता था। किंतु धीरे-धीरे इस तरफ से लोगों का ध्यान भटका और हमारी संस्कृति को दूसरे लोगों ने अपनाना शुरू कर दिया और भारत में विदेशी चकाचौंध का बोलबाला बढ़ने लगा। किंतु यह महसूस हुआ कि जो हमारे पास है वह बहुमूल्य है इसे अपने ही देश में फैलाया जाए, और इसके लिए 'मेक इन इंडिया' को अपनाया गया और पुनः अपने धरोहर को सहेजा गया।

व्यावसायिक एवं औद्योगिक शिक्षा –

डॉ.आर.के. मुखर्जी ने लिखा है - "व्यावसायिक शिक्षा के आधार पर ही प्राचीन भारत अपने आर्थिक जीवन और वैभव का निर्माण करने में सफल हुआ है।" इसमें सैनिक शिक्षा, चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा और वाणिज्य शिक्षण प्रमुख थी। समाज में वर्ण तथा आश्रम व्यवस्था के कारण व्यावसायिक शिक्षा का निश्चित रूप हो गया था। ब्रह्मन, ऋषि, पुरोहित, शिक्षक आदि का कार्य करते थे। वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था में भी व्यवसायिक और औद्योगिक शिक्षा को पाठ्यक्रमों में जोड़कर विशेष जोर दिया जा रहा है, ताकि छात्र अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

भावात्मक एकता –

भारत देश विविधताओं का देश है यहां अनेक प्रांत, भाषाएं, धर्म, संप्रदाय अस्तित्व में है। हर क्षेत्र की अपनी एक समृद्ध संस्कृति तथा परंपरा है। प्राचीन ज्ञान परंपरा विविधता में एकता का प्रतिपादन करती थी। जहां गुरुकुल परंपराओं के माध्यम से एक दूसरेसे विभेद की जगह आपसी एकता के भाव को पैदा किया जाता था। आधुनिक परिदृश्य पुनः इस बात पर जोर देता है कि कार्य की सफलता एकता पर निर्भर है इसलिए दलीय भावना आवश्यक है।

शिक्षा में व्यवहारिकता –

डॉ. अलतेकर के अनुसार - "शिक्षा का उद्देश्य अनेक विषयों का साधारण ज्ञान मात्र करा देना ना था, अपितु इसका आदर्श विभिन्न क्षेत्रों में उच्च कोटि के विशेषज्ञ बनाना था। इसी कारण व्यावसायिक शिक्षा में प्रायोगिक शिक्षण पर बल दिया जाता था।" नई शिक्षण प्रणाली भी इसी ज्ञान परंपराओं को आगे बढ़ा रही है। और व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से पाठ्यक्रमों में विभिन्न विषयों को जोड़ा जा रहा है ताकि छात्र अपने रुचि के अनुसार विषय में विशेषज्ञ बन सके।

निष्कर्ष –

कहा जाता है कि वर्तमान की जड़े अतीत में विद्यमान होती हैं। भारत का अतीत गौरवमय रहा है, इससे वर्तमान आलोकित हुआ है, और भविष्य के प्रति आस्था उपजी है। भारत की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परंपरा विश्व के इतिहास में प्राचीनतम है। भारत में शिक्षा कोई नई बात नहीं है, संसार का कोई भी देश ऐसा नहीं है जहां पर ज्ञान के प्रेम की परंपरा भारत से अधिक प्राचीन एवं शक्तिशाली हो। परिवर्तन शाश्वत सत्य एवं सनातन है, प्रकृति में परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर क्रियाशील रहती है। तकनीकी विकास, यंत्रीकरण, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, कृषि विकास, परिवहन एवं संचार के तीव्र विकास के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। इन परिवर्तनों के मूल में निश्चित रूप से शिक्षा का योगदान समाहित है, क्योंकि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का वाहक है। इसके विपरीत एक दूसरापहलू यह भी है कि भारत जैसे विकासशील देश में बेरोजगारी, छात्र अशांति, युवा असंतोष आदि अनेक समस्याएं शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षाविदों के लिए गंभीर चुनौती प्रस्तुत कर रही हैं। इस परिपेक्षय में शिक्षाविदों, मनीषियों, विचारको, समितियां एवं आयोगों ने शिक्षा में नए विचार, कार्यक्रम, विधियां एवं नवप्रणालियों की आवश्यकता पर बल दिया है। इस दिशा में भारतीय ज्ञान परंपरा को आधार मानकर कुछ परिवर्तन यथा- दूरस्थ शिक्षा, खुला विश्वविद्यालय, जनशिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, जनसंख्याशिक्षण ,पर्यावरण शिक्षा आदि को लागू किया जा रहा है। ताकि पुनः स्वर्णनीम भारत की कल्पना को साकार किया जा सके। तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के आधार पर आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ भारत विश्व अर्थव्यवस्था में कदम से कदम मिलाकर खड़ा हो सके। भारत का हर युवा अपने ज्ञान परंपराओं को आत्मसात करके एक उज्जवल भारत के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभा सके। औरअपनी धरोहर को अपने ही देश में सहेज कर उसमें वृद्धि कर सके।

स्रोत –

1. डॉ. विश्वनाथ बिहारी लाल, डॉ नरेश चंद्र त्रिपाठी, "शिक्षा में नवाचार", विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
2. सुरेश भटनागर, श्रीमती अनामिका सक्सेना, "आधुनिक भारतीय शिक्षा", आर. लाल. बुक डिपो मेरठ।
3. डॉ रामगोपाल सोनी, "उदय उन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक", एचपी भार्गव बुक हाउस आगरा
4. गुरुशरण दास त्यागी, "भारत में शिक्षा का विकास", श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
5. डी एल शर्मा, "शिक्षा तथा भारतीय समाज", https:www.prabhasakshi.com